भारतमाला परियोजना

प्रलिमि्स के लयि:

भारतमाला, सार्वजनकि नविश बोर्ड, पूंजीगत व्यय, वसतु एवं सेवा कर

मेन्स के लयि:

भारतमाला परयिोजना, पीएम गतशिक्तयिोजना और भारत के बुनयिादी अवसंरचना के वकिास में योगदान।

स्रोत: इकॉनोमकि टाइम्स

चर्चा में क्यों?

प्रमुख सड़क नेटवर्क वस्तिार कार्यक्रम **भारतमाला परयिोजना चरण-I का लगभग 50%** कार्य 31 मार्च 2024 तक पूरा हो चुका है और इसके वर्ष 2027-28 तक पूरा होने की उम्मीद है।

- सड़क परविहन और राजमार्ग मंत्रालय के **वज़िन 2047** का लक्ष्य सभी नागरकिों को 100-150 कलिोमीटर के भीतर हाई-स्पीड कॉरडिोर प्रदान करना तथा वशि्व स्तरीय सुवधिाएँ वकिसति करके यात्री सुवधिा को बढ़ाना है।
- यह दृष्टकिोण भारत में राजमार्गों और संबंधति बुनयिादी अवसंरचना के लयि **मास्टर प्लान** का आधार है।

भारतमाला परयिोजना क्या है?

- **परचिय:**
  - भारतमाला परयिोजना सड़क परविहन और राजमार्ग मंत्रालय (Ministry of Road Transport and Highways) के तहत शुरू कयिा गया एक व्यापक कार्यक्रम है।
    - भारतमाला के **पहले चरण** की घोषणा **वर्ष 2017 में की गई थी और इसे 2022 तक पूरा कयिा जाना था** लेकनि **धीमे कार्यान्वयन और वत्तिीय बाधाओं के कारण** इसे पूरा नहीं कयिा जा सका।
  - कनेक्टविटिी एवं लॉजस्टिक्स दक्षता बढ़ाने के लयि **भारतमाला,** सागरमाला**,** शुष्क/भूमबिंदरगाह और अन्य बुनयिादी ढाँचा परयिोजनाओं को पीएम गतशिक्तयिोजना के तहत शामलि कयिा गया है।
    - जबकि **भारतमाला** परयिोजना का उद्देश्य माल और यात्री आवागमन को बढ़ाते हुए**सड़क संपर्क में सुधार करना है, सागरमाला परयिोजना** का उद्देश्य व्यापार एवं समुद्री गतविधि को बढ़ाने के लयि**बंदरगाहों का आधुनकिीकरण तथा तटीय शपिगि को बढ़ावा देना है।**
- **प्रमुख वशिषताएं:**
  - **आर्थकि कॉरडिोर और उनकी दक्षता में सुधार:** भारतमाला पहले से नरि्मति बुनयिादी अवसंरचना की बढ़ी हुई प्रभावशीलता, बहुवधि एकीकरण, नरि्बाध आवागमन के लयि बुनयिादी अवसंरचना की कमयिों को दूर करने एवं राष्ट्रीय व आर्थकि कॉरडिोर को एकीकृत करने पर केंद्रति है।
    - इसका उद्देश्य राजमार्गों पर अधकिांश माल यातायात को ले जाने के लयि स्वर्णमि **स्वर्णमि चतुर्भुज (GQ)** और **उत्तर-दक्षणि तथा पूर्व-पश्चमि (NS-EW) कॉरडिोरों** सहति लगभग 26,000 कलिोमीटर आर्थकि कॉरडिोर का नरि्माण करना है।
  - **इंटर-कॉरडिोर और फीडर रूट:** यह प्रथम मील से अंतमि मील तक की कनेक्टविटिी सुनश्चिति करेगा।
    - इन कॉरडिोर की प्रभावशीलता में सुधार के लयि **लगभग 8,000 कलिोमीटर इंटर-कॉरडिोर** और लगभग **7,500 कलिोमीटर फीडर रूट** की पहचान की गई है।
  - **सीमा और अंतर्राष्ट्रीय संपर्क सड़कें:** बेहतर सीमा सड़क बुनयिादी अवसंरचना से अधकि गतशिीलता सुनश्चिति होगी और साथ ही पड़ोसी देशों के साथ व्यापार को भी बढ़ावा मलिेगा।
  - **तटीय व पोर्ट कनेक्टविटिी हेतु सड़कें:** तटीय क्षेत्रों में कनेक्टविटिी के माध्यम से बंदरगाह आधारति आर्थकि वकिास को बढ़ावा मलिता है, जसिसे पर्यटन एवं औद्योगकि वकिास दोनों बेहतर होते हैं।

- **ग्रीन-फील्ड एक्सप्रेसवे:** उच्च यातायात सघनता और अधिक जाम वाले स्थान की उपस्थिति वाले एक्सप्रेसवे ग्रीन-फील्ड एक्सप्रेसवे से लाभान्वित होंगे।

- **वित्तपोषण तंत्र:**
  - भारतमाला परियोजना को **केंद्रीय सड़क और अवसंरचना निधि उपकर, प्रेषण, अतिरिक्त बजटीय सहायता, राष्ट्रीय राजमार्गों के मुद्रीकरण, आंतरिक एवं अतिरिक्त बजटीय संसाधनों** तथा निजी क्षेत्र के निवेश सहित विभिन्न स्रोतों से वित्त पोषित किया जा रहा है।
- **स्थिति:**
  - मार्च 2024 तक, भारतमाला परियोजना चरण-1 ने 26,425 किलोमीटर सड़कों के निर्माण के लिये सफलतापूर्वक अनुबंध प्रदान किये हैं और **4.59 लाख करोड़ रुपए** के कुल व्यय के साथ **17,411 किलोमीटर का कार्य पूरा किया है।**
    - यह परियोजना **31 राज्यों** और केंद्र शासित प्रदेशों तथा 550 से अधिक ज़िलों में **34,800 किलोमीटर** क्षेत्र को शामिल करती है।

//

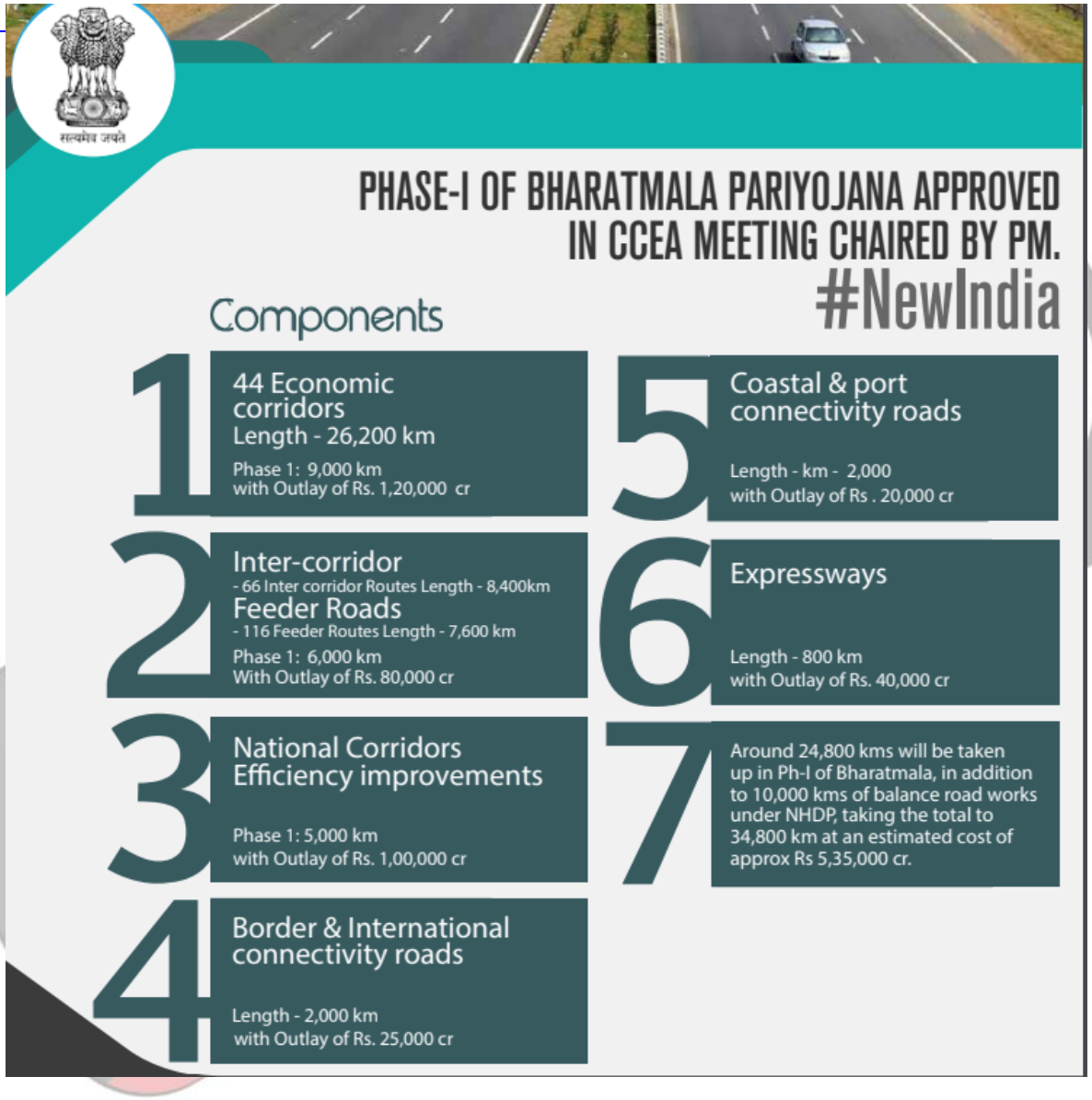

सड़क अवसंरचना विकास हेतु अन्य समान पहल

- प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (PMGSY): यह परियोजना वर्ष 2001 में असंबद्ध बस्तियों को जोड़ने के लक्ष्य के साथ शुरू हुई थी।
- **राष्ट्रीय अवसंरचना पाइपलाइन (NIP):** राष्ट्रीय अवसंरचना पाइपलाइन (NIP) एक पहल है जो सभी नागरिकों के जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार लाने और घरेलू एवं विदेशी प्रत्यक्ष निवेश को आकर्षित करने हेतु पूरे भारत में **विश्व स्तरीय बुनियादी अवसंरचना** प्रदान करेगी।
  - बुनियादी अवसंरचना परियोजनाओं में **ऊर्जा, सड़क, शहरी और रेलवे जैसे क्षेत्रों में** सामाजिक एवं आर्थिक बुनियादी अवसंरचना परियोजनाएँ शामिल हैं, जो भारत में बुनियादी अवसंरचना में अनुमानित पूंजीगत व्यय का लगभग 70% है।
  - इसमें 100 करोड़ रुपए से अधिक लागत वाली ग्रीनफील्ड और ब्राउनफील्ड परियोजनाएँ शामिल हैं।
- **स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना:**
  - यह 4-6 लेन वाले राजमार्गों का एक नेटवर्क है जो भारत के 4 शीर्ष महानगरीय शहरों अर्थात **दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता** को

जोड़ता है, जिससे एक चतुर्भुज बनता है।
    - यह परियोजना **राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजना (NHDP)** के हिस्से के रूप में वर्ष 2001 में शुरू की गई थी। यह भारत की सबसे बड़ी राजमार्ग परियोजना है।
    - स्वर्णिम चतुर्भुज की 4 भुजाएँ/फलक:
        - **दिल्ली-कोलकाता:** 1,453 किमी
        - **चेन्नई-मुंबई:** 1,290 किमी
        - **कोलकाता-चेन्नई:** 1,684 किमी
        - **मुंबई-दिल्ली:** 1,419 किमी
- **नये अनुबंध मॉडल और परिसंपत्ति मुद्रीकरण: इंजीनियरिंग, खरीद और निर्माण (EPC) तथा बिल्ड, ऑपरेट, ट्रांसफर (BOT)** जैसी पारंपरिक निविदा पद्धतियों के अलावा कई नये अनुबंध मॉडल भी उभर कर सामने आये हैं।
    - इनमें **हाइब्रिड एन्युइटी मॉडल (HAM), टोल, ऑपरेट और ट्रांसफर (TOT)** तथा **इन्फ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट (InVIT)** शामिल हैं।

भारत के विकास में सड़क अवसंरचना का क्या महत्त्व है?

- **आर्थिक विकास और उत्पादकता:** सड़क नेटवर्क भारत के आर्थिक विकास के लिये महत्त्वपूर्ण हैं, जो **सकल घरेलू उत्पाद में 3.6% से अधिक का योगदान** देते हैं और **85% से अधिक यात्री यातायात एवं 65% माल ढुलाई** करते हैं।
    - वे **परिवहन लागत को कम करते** हैं, **बाज़ार तक पहुँच बढ़ाते** हैं और **व्यापार को प्रोत्साहित** करते हैं।
    - वे **स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं का समर्थन करते हुए** और **गरीबी को कम करने में मदद** करते हुए महत्त्वपूर्ण **रोज़गार अवसर का भी सृजन** करते हैं।
- **ग्रामीण विकास और सामाजिक समानता: PMGSY** जैसी योजनाओं के तहत ग्रामीण सड़कें दूरदराज़ के क्षेत्रों और आवश्यक सेवाओं के बीच की दूरी को न्यून करती हैं।
    - ये हाशिये पर पड़े समुदायों को सशक्त बनाती हैं, अलगाव को कम करती हैं और ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाती हैं।
    - उन्नत सड़क संपर्क **शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा जैसी आवश्यक सेवाओं तक पहुँच** को बढ़ाता है।
- **पर्यटन और सांस्कृतिक आदान-प्रदान:** कुशल सड़क नेटवर्क पर्यटन को सुविधाजनक बनाते हैं, जो अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। दर्शनीय मार्ग और धरोहर स्थलों तक पहुँच सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देती है तथा स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं का समर्थन करती है।
- **राष्ट्रीय सुरक्षा और रक्षा:** सड़कें **रक्षा रसद और आपातकालीन प्रतिक्रियाओं के लिये महत्वपूर्ण** हैं। सीमा और सामरिक सड़कें राष्ट्रीय सुरक्षा एवं सैन्य आवागमन के लिये आवश्यक हैं।

सड़क अवसंरचना विकास से संबंधित प्रमुख चिंताएँ क्या हैं?

- **पर्यावरण संबंधी चिंताएँ:** सड़क निर्माण से वनों की कटाई, जैवविविधता का ह्रास और प्रदूषण में वृद्धि जैसी पर्यावरणीय चिंताएँ उत्पन्न होती हैं। यह आवास विखंडन, वायु व ध्वनि प्रदूषण तथा जलवायु परिवर्तन का बहुत बड़ा कारक है, जो स्थायी अवसंरचना प्रथाओं की आवश्यकता को उजागर करता है।
    - **अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (IEA)** की रिपोर्ट है कि भारत के CO_2 उत्सर्जन में सड़क परिवहन का योगदान 12% है, जिसमें भारी वाहन **पार्टिकुलेट मैटर (PM) 2.5** उत्सर्जन में प्राथमिक योगदानकर्त्ता हैं।
- **सामाजिक चिंताएँ:** सड़क परियोजनाओं से समुदायों का विस्थापन हो सकता है, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में सुरक्षा संबंधी समस्याएँ हो सकती हैं। अपर्याप्त पुनर्वास गरीबी को बढ़ा सकता है, जबकि खराब तरीके से डिज़ाइन की गई सड़कें दुर्घटना दर में योगदान करती हैं। वर्ष 2021 में भारत में 1,50,000 से अधिक मौतें हुईं, जो सुरक्षित अवसंरचना की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं।
- **आर्थिक चिंताएँ:** कई सड़क परियोजनाओं में अत्यधिक लागत वृद्धि और विलंब होता है, **नियंत्रक-महालेखापरीक्षक (CAG)** ने ऐसे उदाहरणों की रिपोर्ट की है जिनमें **लागत, बजट से 40% से अधिक** पाई गई।
    - इसके अतिरिक्त **सुदृढ़ रखरखाव फ्रेमवर्क की कमी** से सड़कों की हालत तेज़ी से खराब होती है, जिससे दीर्घकालिक लागत लगभग दोगुनी हो जाती है।
- **शासन और नीतिगत मुद्दे:** इसमें **नीलामी और क्रियान्वयन में भ्रष्टाचार** शामिल है, जिससे घटिया अवसंरचना का निर्माण होता है।
    - इसके अतिरिक्त **व्यापक नियोजन की कमी** के कारण खराब तरीके से निष्पादित परियोजनाएँ सामने आती हैं, जिससे **एकीकृत परिवहन नियोजन की आवश्यकता** पर प्रकाश डाला गया है।

आगे की राह

प्रतिस्पर्द्धी दरों पर कच्चा माल प्राप्त करने और आपूर्तिकर्त्ताओं के साथ अनुकूल शर्तों पर सौदागिरी करने के लिये रणनीतिक खरीद पर **ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।** साथ ही पारदर्शी प्रथाओं को अपनाकर भूमि अधिग्रहण को सुव्यवस्थित करना और विवादों को कम करने के लिये भूमि पूलिंग जैसे विकल्पों की खोज करना आवश्यक है। इसके अलावा **स्थिर GST नीतियों की आवश्यकता है** और उद्योग पर **कर परिवर्तनों के प्रभावों को दूर करने** के लिये सरकारी अधिकारियों के साथ मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न: 'राष्ट्रीय निवेश और बुनियादी ढाँचा कोष' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं? (2017)

1. **यह नीति आयोग का अंग है।**
2. वर्तमान में इसके पास 4,00,000 करोड़ रुपए का कोष है।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (d)

?????:

प्रश्न . "अधिक तीव्र और समावेशी आर्थिक विकास के लिये बुनियादी ढाँचे में निवेश आवश्यक है।" भारत के अनुभव के प्रकाश में चर्चा कीजिये। (2021)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/bharatmala-pariyojana